License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

योना 1:1–3:10

2 राजा 14:25 में योना को प्रभु के दास के रूप में वर्णित किया गया था।

योना की पुस्तक में, परमेश्वर चाहते थे कि योना न्याय के संदेश का प्रचार करें। यह संदेश नीनवे नगर के खिलाफ था। लेकिन योना ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया और न ही परमेश्वर का सम्मान किया। उन्होंने तुरंत नीनवे में अश्शूर के रहनेवालों के बीच परमेश्वर का संदेश नहीं बांटा। इसके बजाय, वह भाग गए।

यह इस कहानी में पौधों, पशुओं और मौसम से भिन्न था। परमेश्वर ने एक तेज हवा और एक विशाल मछली भेजी। परमेश्वर ने एक पत्तेदार पौधा उगाया। उन्होंने एक कीड़ा और पूर्वी हवा भी भेजी। पौधे, पशु और हवा सभी अपने सृष्टिकर्ता की आज्ञा का पालन करते थे।

योना ने परमेश्वर के साथ जो व्यवहार किया वह मल्लाहों के व्यवहार से भिन्न था। मल्लाह योना की तरह इब्रानी नहीं थे। वे एकमात्र परमेश्वर की आराधना नहीं करते थे। लेकिन उन्होंने परमेश्वर के प्रति सम्मान दिखाया। यह उन्होंने परमेश्वर से सहायता के लिए पुकार कर और बलिदान चढ़ाकर दिखाया।

योना की प्रार्थना भजन संहिता की कई कविताओं जैसी थी जो परमेश्वर का धन्यवाद करती हैं। योना ने परमेश्वर का धन्यवाद किया कि उन्होंने उसे भूमध्य सागर में डूबने से बचाया। फिर भी योना ने यह स्वीकार नहीं किया कि उन्होंने कुछ गलत किया था। उन्होंने यह नहीं कहा कि उन्हें परमेश्वर की आज्ञा न मानने का खेद है। उन्होंने परमेश्वर से क्षमा माँगने की कोशिश नहीं की।

यह उससे भिन्न था जो राजा, कुलीन लोग और नीनवे के लोग करते थे। जब योना ने परमेश्वर का न्याय का संदेश सुनाया, तो उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने बुरे काम किए थे। तुरंत ही उन्होंने खाना छोड़ दिया। उस समय उपवास और खुरदरे कपड़े पहनना आम प्रथाएँ थीं। ये ऐसे तरीके थे जिनसे लोग दिखाते थे कि वे अपने पाप से मुड़कर पश्चाताप कर रहे हैं। नीनवे के लोगों ने अपने पशुओं को भी कुछ समय के लिए खाना नहीं दिया। राजा राख में बैठ गए। यह दिखाता था कि उन्होंने परमेश्वर के सामने खुद को नम्र बना लिया। लोगों ने दूसरों को नुकसान पहुँचाना बंद कर दिया। उन्होंने पश्चाताप किया और पूरे हृदय से परमेश्वर से प्रार्थना की। इन सभी कार्यों ने दिखाया कि नीनवे के लोग अपनी राहें बदलने के प्रति कितने गंभीर थे।

उनके पाप पर परमेश्वर का क्रोध थम गया। उन्होंने उन पर दया और करुणा दिखाई।

योना 4:1–11

योना का क्रोध तब शुरू हुआ जब परमेश्वर का क्रोध समाप्त हुआ। उन्हें लगा कि उनका क्रोधित होना सही था। उन्होंने सोचा कि परमेश्वर का उनके क्रोध को समाप्त करना गलत था। योना नहीं चाहते थे कि परमेश्वर अश्शूरियों पर अपना कोमल प्रेम दिखाएँ।

याकूब के वंशावली से आए लोग अश्शूरियों को बाहरी मानते थे। अश्शूरियों ने कई वर्षों तक परमेश्वर के लोगों के साथ बुरा व्यवहार किया था। योना चाहते थे कि परमेश्वर उनके खिलाफ न्याय लाए और उन्हें नष्ट कर दें।

योना उस पेड़ की परवाह करते थे जिसे परमेश्वर ने उगाया था। पेड़ ने उन्हें छाया दी और उन्हें आरामदायक महसूस कराया। जब पेड़ सूख गया, तो योना का क्रोध भड़क गया। वे उस पेड़ की अधिक परवाह करते थे, बजाय इसके कि वे अश्शूर के मनुष्यों की परवाह करते।

परमेश्वर पेड़ की परवाह करते थे और उसकी देखभाल करते थे। वे योना और नीनवे के लोगों और पशुओं की भी परवाह करते थे। परमेश्वर ने मूसा को अपने बारे में यह बताया था कि वे दयालु और कृपालु परमेश्वर हैं। परमेश्वर अनुग्रहकारी हैं और कोप करने में धीरजवन्त हैं। परमेश्वर विश्वासयोग्य और प्रेम से परिपूर्ण हैं (निर्गमन 34:6)।

योना समझते थे कि परमेश्वर इस्राएलियों (इस्राएल) के लिए दयालु, कृपालु और प्रेम से परिपूर्ण हैं। लेकिन योना नहीं चाहते थे कि परमेश्वर नीनवे के लोगों के लिए भी ऐसे हों। परमेश्वर ने योना को दिखाया कि वे उन सबके लिए प्रेम से परिपूर्ण हैं जिन्हें उन्होंने बनाया है। इसमें वे लोग भी शामिल थे जिन्हें परमेश्वर के लोग अपने शत्रु मानते थे।